अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 15 जून 2019

इस बात का हमेशा ख्याल रखें कि सिर्फ आपका संकल्प ही आपकी सफलता के लिए मायने रखता है, कोई और चीज नहीं...
अब्राहम लिंकन

शंघाई सहयोग संगठन से भारत बेशक हाल में जुड़ा है, लेकिन इसके सदस्य देशों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और मदद की प्रतिबद्धता तथा आतंकवाद के खिलाफ बना जनमत उम्मीद जगाते हैं।

बिश्केक में मोदी

किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित एससीओ (शंघाई सहयोग संगठन) की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आतंकवाद पर चिंता जताने के बाद एससीओ के घोषणापत्र में आतंकवाद को जिस तरह शामिल किया गया, वह भारत के रुख का ही स्वीकार है। इससे पहले चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के साथ मोदी की सौहार्दपूर्ण माहौल में मुलाकात हुई। मोदी और जिनपिंग ने सीमा विवाद पर बात करने का भरोसा जताया, तो जिनपिंग ने दोनों देशों को एक दूसरे के लिए खतरा नहीं, मौका बताया। संयोग से इस साल भारत-चीन संबंधों के सत्तर साल पूरे हो रहे हैं, और जिनपिंग इस वर्ष यहां आनेवाले भी हैं। ऐसे ही, पुतिन के साथ मोदी ने रक्षा और ऊर्जा के मुद्दों पर बात की और अमेठी में राइफल फैक्टरी की स्थापना के लिए शुक्रिया अदा किया, तो पुतिन ने मोदी को ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम में मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया। रूस से टूटे हुए देशों के संगठन एससीओ से भारत बेशक बाद में जुड़ा है, लेकिन दुनिया की 42 फीसदी आबादी और 20 प्रतिशत जीडीपी का प्रतिनिधित्व करने वाले इस संगठन से, जिसके अधिकांश सदस्य देशों के पास तेल और गैस के भंडार हैं, जुड़ने का भारत को लाभ हुआ है, क्योंकि यह आर्थिक और सरक्षा सहयोग बढ़ाने का मंच है और सार्क के लगभग अप्रभावी हो जाने की पृष्ठभूमि में इस मंच से पाक प्रायोजित आतंकवाद पर भारत दुनिया का ध्यान भी आकृष्ट कर सकता है, जैसा कि उसने बिश्केक में किया। वहां हमारे प्रधानमंत्री ने पाक प्रधानमंत्री इमरान खान की अनदेखी की, आतंकवाद के खिलाफ सदस्य देशों से एकजुट होने का आह्वान किया, और पाकिस्तान को दोटूक संदेश भी दिया कि आतंकवाद के खिलाफ ठोस कार्रवाई के बाद ही उसके साथ बातचीत होगी। गौरतलब है कि जनवरी, 2016 में

पठानकोट एयरबेस पर हुए आतंकी हमले के बाद से पाकिस्तान के साथ वार्ता बंद है, लेकिन पाक प्रायोजित आतंकी घटनाएं बंद नहीं हुई हैं। भारत और किर्गिस्तान के बीच कई समझौतों के अलावा मेडिकल टूरिज्म समेत अन्य कई क्षेत्रों में सदस्य देशों के साथ सहयोग की प्रतिबद्धता बताती है कि शंघाई सहयोग संगठन के साथ भारत का जुड़ाव व्यापार और सुरक्षा के अलावा मदद और सांस्कृतिक लेन-देन के भी नए क्षितिज खोलेगी।

स्त्री ही रचेगी प्रेम की नई परिभाषा

अपने अधिकार के लिए लड़ने का मतलब यह नहीं कि महिलाएं पुरुष हो जाएं। स्त्री को स्त्री बनकर ही जीना होगा और पुरुषवादी सोच से मुक्ति पानी होगी। यानी हम पुरुष निर्भर नहीं होंगे, लेकिन स्त्री के गुणों, उनकी विशेषताओं को बरकरार रखेंगे।

कुछ साल पहले बांग्लादेश में अभिनेता जयंत चट्टोपाध्याय की स्त्री मैत्रेयी ने पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली थी। जितना मैंने सुना था, जयंत का किसी और महिला से प्रेम था। मैत्रेयी को यह सहन नहीं हुआ, इसलिए उसने आत्महत्या कर ली थी। थोड़े दिनों पहले बांग्लादेश के कलाकार काजी आरिफ की मृत्यु हुई। सुना है, कुछ साल पहले उनके प्रेम में सुमना मेहरून नाम की एक कवयित्री ने आत्महत्या कर ली थी। कभी कोई स्त्री अपने पति के व्यवहार से दुखी होकर आत्महत्या करती है, तो कभी कोई प्रेमिका अपने प्रेमी की उदासीनता से क्षुब्ध होकर अपना जीवन समाप्त कर देती है।

तस्लीमा नसरीन
चर्चित लेखिका

पुरुष असंख्य महिलाओं की मृत्यु के लिए जिम्मेदार हैं। पुरुषवर्चस्ववादी समाज में पुरुषों से प्रेम करने का खामियाजा स्त्रियों को भुगतना पड़ता है। इसके बाद भी लड़कियां पुरुषों से प्रेम करती हैं। औरत की आत्महत्या की हर घटना बताती है कि उसके जीवन का कोई मोल नहीं है। ऐसा नहीं है कि पुरुषों की आत्महत्याओं की घटनाएं सामने नहीं आतीं। बल्कि विकसित देशों में पुरुषों की आत्महत्या का आंकड़ा तुलनात्मक रूप से अधिक देखने में आता है। लेकिन इसके पीछे प्रेम नहीं, बल्कि मानसिक समस्या और आर्थिक परेशानी जैसे कारण होते हैं।

पुरुष अमूमन स्त्री के प्रेम में बावले होकर आत्महत्या नहीं करते। फिर लड़कियां ही आत्महत्या क्यों करती हैं? इसलिए कि प्रेम करने पर लड़कियां बहुत कमजोर, बहुत असहाय हो जाती हैं, और खुद को तुच्छ भी समझने लगती हैं, जिनके जीवन का कोई मोल नहीं है। नारी प्रेम करती है, तो पुरुष के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देने की भावना रखती है। दूसरी तरफ पुरुष प्रेम करता है, तो वह नारी को सुरक्षा देने के नाम पर उसके शरीर पर अपना अधिकार जताने की कोशिश करता है। यह और कुछ हो, पर प्रेम नहीं

है। जिस संबंध में समानता नहीं है, वह प्रेम हो ही नहीं सकता। ऐसे में, नए सिरे से प्रेम को रचने की कोशिश लड़कियों को ही करनी होगी। लेकिन लड़कियों के बदलने से समाज तो नहीं बदलेगा। जब तक पुरुष नहीं बदलेगा, जब तक पुरुषवर्चस्ववादी समाज व्यवस्था की बुनियाद नहीं हिलाई जाएगी, तब तक पुरुष तंत्र द्वारा रची गई प्रेम की परिभाषा भी बरकरार रहेगी।

पुरुषों ने तो जता ही दिया है कि नारी के लिए प्रेम की परिभाषा क्या होनी चाहिए। हमारा सामाजिक विमर्श चीख-चीखकर बताता है कि पुरुष के बिना स्त्री का जीवन अर्थहीन है। सती प्रथा भले खत्म हो गई हो, लेकिन स्त्रियों को आज भी रोज अग्नि में अपना जीवन होम करना पड़ता है। पुरुषों का हित सोचने वाली स्त्रियां ही हमारी रोल मॉडल बनती हैं। लेकिन हमेशा पुरुषों का हित सोचना भी क्या खुद को दोयम दर्जे का मान लेना नहीं है? मृत्यु और आत्महत्या के अतिरिक्त भी महिलाएं मारी जाती हैं। देर रात तक अपने पति का इंतजार करने वाली, हमेशा पति और पुरुषवर्चस्ववादी समाज की यातनाएं झेलने वाली और अपना मुंह बंद रखने वाली महिलाओं का होना न होने के बराबर ही है। पिछड़े और गरीब देशों में ऐसी महिलाओं की संख्या ही अधिक है।

प्रेम में पागल या हताश होने पर आत्महत्या कर लेने की महिलाओं की प्रवृत्ति को उनके कोमल हृदय का ही परिचायक माना जाता है। लेकिन मरना कोई कोमल प्रवृत्ति नहीं है। इसलिए स्त्री जब आत्महत्या करती है, तो अनजाने में ही वह पुरुष हो जाती है। जैसे पुरुष महिलाओं से घृणा करते हैं, वैसे ही महिलाएं खुद से घृणा करने लगती हैं। पुरुष जिस तरह महिलाओं की हत्या करते हैं, वैसे ही महिलाएं भी खुद को मार डालती हैं।

मैं लड़कियों और महिलाओं को हमेशा अन्याय के विरुद्ध खड़े होने के लिए कहती हूं। अपने अधिकार के लिए लड़ने के लिए कहती हूं। मेरा मानना है कि खुद को दबी-कुचली और महत्वहीन समझकर स्त्री ने अपना बहुत नुकसान किया है। लेकिन मैं यह भी नहीं कहती कि महिलाएं पुरुष हो जाएं। स्त्री को स्त्री बनकर ही जीना होगा। यानी हम पुरुष निर्भर नहीं होंगे, लेकिन स्त्री के गुणों, उनकी विशेषताओं को बरकरार रखेंगे। स्त्री जब स्त्री बनकर जिएगी, तो आत्महत्या बंद होगी। लड़की अपनी लड़कीपन के साथ जिएगी, तो लड़कियों के प्रति घृणा कम होगी। लड़की अपनी लड़कीपन के साथ जिएगी, तो पुरुषवर्चस्ववादी समाज ने लड़कियों के रूप और गुण का जो पैमाना तय किया है, उसे न मानकर इसका पैमाना वह खुद तय करेगी। स्त्री का पुरुष होना पुरुषों के कपड़े पहनना और पुरुषों का पेशा माने जाने वाले पेशों में अपनी प्रतिभा साबित करना नहीं है। वह तो इस दौर में महिलाएं खूब कर रही हैं, जिसके लिए उन्हें बधाई भी दी जानी चाहिए।

स्त्री का पुरुष हो जाने का मतलब है पुरुषवादी सोच को स्वीकार कर लेना। कोई भी स्वतंत्रचेता स्त्री पुरुषवादी सोच को स्वीकार नहीं कर सकती। पितृसत्ता ने तमाम पुरुषों को जिस मानसिकता से तैयार किया है, उस मानसिकता को अस्वीकार करना ही पुरुष होने को अस्वीकार करना है। जब तक लड़कियां यह काम नहीं करेंगी, तब तक वे पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता के साथ ही खड़ी हैं। इसी कारण अक्सर महिलाओं के खिलाफ पुरुषों की लड़ाई में कुछ महिलाओं को भी पुरुषों के पाले में खड़े देखा जाता है।

पुरुष भले ही अपने अधिकार महिलाओं को न देना चाहे, लेकिन वह चाहता है कि उसकी पुरुषवादी मानसिकता को औरतें भी जस की तस स्वीकार करें। औरतों में यह मानसिकता है, तभी प्रेम करती लड़कियों को निर्ममता से मार डालने वाली माताएं हैं, अपराधी पतियों का साम्राज्य संभालती पत्नियां हैं, परिवारों में तानाशाह मां या दादियां हैं। दुनिया में पुरुषवर्चस्ववादी सोच टिकी हुई है, तो सिर्फ इसलिए नहीं कि पुरुष ऐसा चाहते हैं, बल्कि यह इसलिए भी है, क्योंकि महिलाओं ने भी इस पुरुषवादी सोच को बनाए रखने में जाने-अनजाने मदद की है। इस सोच से मुक्ति में ही महिलाओं की मुक्ति छिपी है।

टर्नटेबल पर किया गया प्रयोग रैप बन गया

अपनी कहानी

>> जोसेफ सेडलर

स्वीडन पोलर म्यूजिक प्राइज मिलना सिर्फ मेरा ही नहीं, बल्कि हर डीजे, रैपर, ब्रेक-डांसर का सम्मान है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे दुनिया के कुछ महान मनोरंजनकर्ताओं में शामिल किया जाएगा। मैंने हमेशा अपने इस काम को सम्मान के रूप में देखा है।

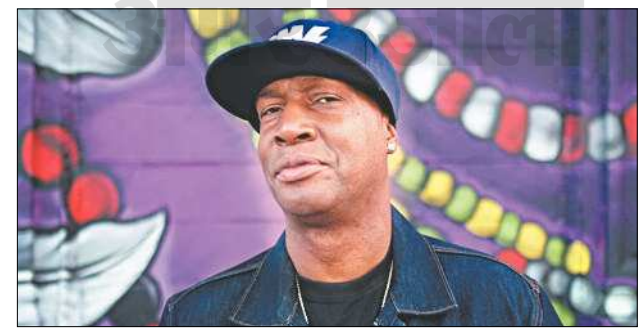

मेरा जन्म कैरेबियन देश बारबडोस में हुआ, बाद में हम अमेरिका आ गए। न्यूयॉर्क के ब्रोंक्स में मेरा बचपना बीता। चार बहनों के बीच मैं अकेला भाई था। मेरी मां सिलाई करती थीं, जबकि मेरे पिता कैरेबियन और अफ्रीकी अमेरिकी-रिकॉर्ड के बहुत बड़े प्रशंसक थे और वह उन्हें एकत्रित करते थे। वह शराब पीते थे,और अक्सर मेरी मां और बहनों के साथ मारपीट करते थे। उन्होंने हमारा साथ तब छोड़ दिया जब मैं सिर्फ सात वर्ष का था।

संघर्ष में बीता बचपन

न्यूयॉर्क में मुझे और मेरी बहन को बचपन में फॉस्टर केयर (स्थानीय अभिभावकों की देखरेख) में रहना पड़ा। वहां हमने पांच वर्ष बिताए, उसी दौरान मुझे एक स्कूल के कार्यक्रम में पहली बार डीजे बनने का मौका मिला। इस बीच मैंने सैमुअल गॉम्पर्स हाई स्कूल (जो कि सार्वजनिक व्यवसायिक स्कूल था) से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत का काम सीखा। मेरे पिता के पास सर्वश्रेष्ठ गानों के रिकॉर्डों का संग्रह मौजूद था। मैं उनकी अलमारी खोलता था और उनके पास मौजूद सारे रिकॉर्ड देखता था। मैं उन्हें छूने की कोशिश भी करता था, पर वापस आ जाता था। पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं न्यूयॉर्क की डीजे पार्टियों में शामिल हो गया।

हिप-हॉप का उभार

वर्ष 1971 में चीजें तेजी से बदल रही थीं। संगीत अधिक प्रभावी हो रहा था। तभी हिप-हॉप उभर कर सामने आया। इसकी मूल कहानी लोग अपने-अपने तरीके से बताते हैं। पर मेरा मानना है कि ब्रोंक्स में ही इसका उद्भव हुआ। हम सभी ने इसमें भूमिका निभाई। ब्रोंक्स के तीन डी.जे. ने साथ मिलकर इसे पार्क व सामुदायिक केंद्रों पर आयोजित किया। क्लाइव कैंपबेल ने रिकॉर्ड पर वाद्य यंत्रों को एक साथ जोड़कर भीड़ को आकर्षित किया। साउंडव्यू में, अफ्रीका बंबाता और फ्लैश तीसरा था। बंबाता के पास सबसे ज्यादा रिकॉर्ड्स के चयन थे। मैं सिर्फ संगीत देने का एक तरीका लेकर आया, इसलिए तकनीकी रूप से कहें तो हम तीनों ने मिलकर की खोज की थी।

बन गया रैप

शुरुआत में मैंने पीट जोन्स, कूल हर्क और ग्रैंडमास्टर फ्लावर्स की शैलियों और तकनीकों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया। फिर मैंने अपने बेडरूम में डीजे गियर के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया, और अंततः तीन डीजे की मानक तकनीकें बनाईं। एक उपकरण के रूप में टर्नटेबल्स(रिकॉर्ड प्लेयर) का उपयोग करने वाला मैं पहला डीजे था और एनालॉग उपकरणों के साथ सब कुछ कर रहा था, इसलिए मुझे डिजिटल दुनिया में कदम रखने में लंबा समय लगा। मुझे महसूस नहीं हुआ कि मैं टर्नटेबल्स पर जो कर रहा था, वह रैप बन जाएगा। मैंने जो भी किया, उसके ठोस आधार के निर्माण में दस-बारह साल खर्च करने में कोई आपत्ति नहीं थी। मुझे खुशी है कि लोगों ने मेरा अनुसरण किया। मैं बदलाव को स्वीकार करता हूं, यदि आप इसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो यह आपको पीछे छोड़ देता है। इसलिए मैं बदलाव के साथ अच्छा महसूस करता हूं।

-संगीत का नोबेल माने जाने वाले पोलर प्राइज से सम्मानित संगीतकार जोसेफ सेडलर (ग्रैंड मास्टर फ्लैश) के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

रणबीर दंड संहिता

>> प्रतीकात्मक तस्वीर

1932 में जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन महाराजा के नाम पर रणबीर दंड संहिता लागू की गई थी।

भारत के कानूनी मामलों में अदालतें भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के तहत कार्रवाई करती हैं, लेकिन जम्मू-कश्मीर में आईपीसी की जगह रणबीर दंड संहिता (आरपीसी) का इस्तेमाल किया जाता है। जम्मू कश्मीर के कठुआ दुष्कर्म मामले में फैसला आने के बाद आरपीसी चर्चा के केंद्र में है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर राज्य में भारतीय दंड संहिता का इस्तेमाल जम्मू-कश्मीर में नहीं किया जा सकता। दरअसल, आजादी से पहले जम्मू-कश्मीर एक स्वतंत्र रियासत थी। वहां डोगरा राजवंश का शासन था, महाराजा रणबीर सिंह वहां के शासक थे। 1932 में महाराजा के नाम पर रणबीर दंड संहिता लागू की गई थी। यह संहिता थॉमस बैबिंटन मैकॉले की आईपीसी के ही समान है, पर कुछ मामलों में अलग है। आईपीसी की धारा 4 कंप्यूटर के माध्यम से किए गए अपराधों को व्याख्यायित और संबोधित करती है, लेकिन आरपीसी में इसका कोई उल्लेख नहीं है। आईपीसी की धारा 153 सीएए के तहत सार्वजनिक सभाओं के दौरान जान-बूझकर शस्त्र लाने को दंडनीय अपराध माना जाता है, जबकि आरपीसी में इस महत्वपूर्ण विषय का उल्लेख नहीं है। आईपीसी की धारा 195ए के तहत अगर कोई किसी को झूठी गवाही या बयान देने के लिए प्रताड़ित करता है, तो वह सजा का हकदार माना जाता है, जबकि आरपीसी में इस संबंध में कोई निर्देश नहीं है। आईपीसी की धारा 304बी, दहेज के कारण होने वाली मौतों से संबंधित है, लेकिन आरपीसी में इसका कोई उल्लेख नहीं है।

चेर्नोबिल बना पर्यटन स्थल

चेर्नोबिल में हुए परमाणु हादसे पर बने एक टीवी धारावाहिक के प्रसारण के बाद पर्यटकों की संख्या बढ़ी।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए लियाना मार्गा

अप्रैल, 1986 में जब उत्तरी यूक्रेन के एक परमाणु संयंत्र में धमाका हुआ था, तब सोवियत अधिकारियों ने इस हादसे से संबंधित खबरों के प्रसारण को नियंत्रित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यहां तक कि टेलीफोन पर होने वाली निजी बातचीत में चेर्नोबिल शब्द का जिक्र आने पर फोन लाइन काट दी जाती थी। लेकिन तीन दशक बाद घटनाक्रम ने अजीब मोड़ लिया है और चेर्नोबिल के आसपास का वर्जित क्षेत्र तेजी से पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है। ऐसा पिछले महीने अमेरिका और ब्रिटेन में इस धमाके पर आधारित एक टीवी मिनी सीरीज (शृंखला) के लोकप्रिय होने के कारण हुआ है।

एचबीओ से प्रसारित *चेर्नोबिल* नामक इस मिनी सीरीज में परमाणु संयंत्र की चार नंबर इकाई में हुए धमाके और उसके बाद के प्रभाव को काल्पनिक रूप दिया गया है। घटनास्थल की सैर करवाने वाली कंपनी सोलोईस्ट के प्रमुख विक्टर कोरोल कहते हैं कि रोजाना पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है और तकरीबन इसमें पचास फीसदी की बढ़ोतरी हो चुकी है। वह कहते हैं कि लोग टीवी देखते हैं और उसके

बाद उस स्थान को देखना चाहते हैं, जहां यह हादसा हुआ था। 'एक्सलूशन जोन मैनेजमेंट' से संबंधित यूक्रेन की सरकारी एजेंसी के मुताबिक 2014 में वहां 8,404 पर्यटक आए थे, जो 2018 में बढ़कर 71,862 हो गए और इस वर्ष अकेले मई महीने में ही 12,591 पर्यटक यहां आए। इस हादसे की वजह से कई वर्षों के दौरान हजारों लोग मारे गए थे और बाद के दशकों तक इसकी वजह से पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचा था, ऐसे में वहां पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन पर्यटकों का व्यवहार चिंता का कारण भी बन गया है।

इस हफ्ते सोशल मीडिया में आई वहां की तस्वीरों की आलोचना की गई और उन्हें पीड़ितों और घटनास्थल की पवित्रता का अपमान माना गया। एक महिला को लेकर खासी नाराजगी थी, जो कि एक तस्वीर में हादसे के बाद खाली करवा दिए गए भुतहा शहर प्रिप्यत में घातक पदार्थों से बचाव के लिए पहने जाने वाले 'हैजमैट सूट' में भड़काऊ नजर आ रही है। इन तस्वीरों को देखने के बाद *चेर्नोबिल* के लेखक और निर्माता क्रैग मैजिन ने पर्यटकों से अपील की कि वे ऐसे लोगों की स्मृतियों का सम्मान करें, जिन्होंने वहां अपना जीवन या जिंदगी जीने के साधन खो दिए। आप ध्यान रखें कि वहां एक भयावह हादसा हुआ था। पीड़ितों के सम्मान में संयमित व्यवहार करें।

टूर डायरेक्टर कोरोल कहते हैं कि 1986 में जब यह हादसा हुआ था, तब वह पश्चिमी यूक्रेन में रहते थे और तब वह सोवियत संघ का हिस्सा था। चेर्नोबिल आने वाले अधिकांश पर्यटकों को एहसास होता है कि वे जो कुछ देख रहे हैं कि उसकी गंभीरता कैसी है। हादसे के बाद लंबे समय तक सोवियत नागरिकों से इसकी व्यापकता और पर्यावरण पर होने वाले इसके प्रभाव से संबंधित जानकारियों को छिपाए रखा गया। वहां अब भी एक हजार वर्गमील का वर्जित क्षेत्र है, लेकिन वहां कुछ लोग रह रहे हैं।

इस हफ्ते के शब्द

अमिताभ घोष

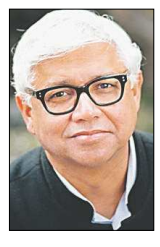

प्रख्यात लेखक अमिताभ घोष को 54वां ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। कोलकाता में जन्मे घोष ने दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण की है।

ऑस्पिस (AUSPICE)

हाल ही में डोनाल्ड ट्रंप द्वारा किम जोंग उन के लिए प्रयोग किया गया यह शब्द चर्चा में रहा है। इसका अर्थ होता है- शरण में।

बैंकों में धोखाधड़ी

2.05 लाख करोड़

रुपये की धोखाधड़ी के 50 हजार से ज्यादा मामले आरबीआई के अनुसार, पिछले 11 वर्षों में दर्ज किए गए।

सूत्र

>> जेन कूम

जीवन में सफलता के लिए दोस्त भी जरूरी होते हैं

मेरा बचपन यूक्रेन के कीव में बीता। मेरी मां गृहिणी थीं और मेरे पिता अस्पतालों एवं स्कूलों के निर्माण का काम करते थे। मेरे माता-पिता ने शायद ही कभी फोन पर बात की हो, क्योंकि उन्हें सरकार द्वारा फोन टैप किए जाने का डर था। इसलिए मैं ऐसी संचार प्रणाली के बारे में सोचता था, जिस पर किसी का नियंत्रण न हो। सोलह वर्ष की उम्र में मैं राजनीतिक अस्थिरता और यहूदी विरोधी माहौल के कारण अपनी मां के साथ अमेरिका चला आया, जहां हमें सरकारी सहायता के तहत दो कमरे का एक छोटा-सा अपार्टमेंट रहने के लिए मिला। मेरे पिता की यूक्रेन में ही मृत्यु हो गई। मेरा परिवार इतना गरीब था कि अमेरिका में हम कतार में खाना खाते थे। मेरी मां आया का काम करती थी और मैं ग्रॉसरी की दुकान में सफाई का काम करता था। जब मैं अट्ठारह वर्ष का हुआ, तो मेरी दिलचस्पी कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में जगी और मैं कंप्यूटर से संबंधित पुरानी किताबें खरीदकर लाता था और उसे अच्छी तरह पढ़कर फिर बेच देता था। फिर मैंने सैन जोस स्टेट यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया, साथ ही अर्न्स्ट ऐंड यंग कंपनी में सुरक्षा का काम करने लगा। 1977 में मेरी मुलाकात याहू में काम करने वाले ब्रायन एक्टन से हुई, जो बाद में गहरी दोस्ती में बदल गई। याहू में मुझे एक्टन की मदद से ही नौकरी मिली। लेकिन कुछ ही दिनों बाद एक ऐसा मौका आया, जब मेरे बॉस ने मुझे कह दिया कि या तो पढ़ाई कर लो या नौकरी करो। अंततः मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अगले नौ वर्षों तक हम (मैं और एक्टन) याहू में काम करते रहे। 2007 में हमने याहू छोड़ दी और भ्रमण पर निकल गए। वर्ष 2009 में मैंने एक आईफोन खरीदा था और जब मैंने ऐप डाउनलोड किया, तो पाया कि डायरेक्ट मैसेंजिंग के लिए कोई अच्छा ऐप नहीं है। इसके अलावा उनमें प्राइवेसी भी नहीं मिलती थी। तब मैंने एक प्राइवेट मैसेंजिंग ऐप बनाने के बारे में सोचा और उसी साल व्हाट्सऐप लॉन्च किया। व्हाट्सऐप लॉन्च होने के शुरुआती दौर में प्रोग्रामिंग और एप्लीकेशन की कई दिक्कतें थीं। मैसेंजर बार-बार क्रैश हो जाता था। मैं हार मानकर काम छोड़ने वाला था, लेकिन एक्टन ने ही मुझे भरोसा दिलाया कि व्हाट्सऐप जरूर कामयाब होगा। यह जल्दी ही दुनिया भर में लोकप्रिय हो गया। बाद में फेसबुक के साथ मैंने 19 अरब डॉलर में एक सौदा कर इसे बेच दिया। आज मैं आर्थिक रूप से समृद्ध हूं, पर गरीबी के दिनों को नहीं भूल पाया हूं, इसलिए समय-समय पर दान करता रहता हूं।

नया आइडिया और दृढ़ लगन किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए जरूरी हैं। सच्चे दोस्त भी जीवन की राह में मददगार होते हैं।